3.→ केंद्र स्थल तथा उपांत स्थल ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रस्तुत दो महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं, जो स्थल तथा समुद्रों की विशेषताओं को उजागर करता है। इन सिद्धांतों से कई अन्य विचारधाराओं का जन्म होता है, जो भूगोल विषय को और व्यापक स्वरूप प्रदान करता है।

* मैकिंडर का हृदयस्थल सिद्धांत :–

उन्होंने यूरोपीय एशिया और अफ्रीका को मिलाकर बने

- यह एक नियतिवादी विचारधारा है।
- मैकिंडर ने इतिहास को जल शक्ति और स्थलशक्ति के बीच संघर्ष के रूप में देखा जिसमें थल शक्ति को श्रेष्ठ माना।
- उन्होंने 1904 में अपने शोध पत्र "The Geographical Pivot of History" को प्रस्तुत किया
- उन्होंने यूरोप एशिया और अफ्रीका से मिलकर बने विशाल स्थल को विश्व द्वीप की संज्ञा दी
- यह विश्वद्वीप संपूर्ण पृथ्वी के स्थल खंड का 2/3 भाग समाहित करता है। और इसका क्षेत्र .. मिलियन वर्ग km है। तथा इसमें संपूर्ण विश्व की जनसंख्या का 88% जनसमूह वास करता है।

धुरी क्षेत्र :–

- यह तीन ओर से पर्वतों से घिरा हुआ क्षेत्र हिमालय, ... आर्कटिक सागर द्वारा घिरा हुआ

- इसका विस्तार पश्चिम में वोल्गा नदी से लेकर पूर्वी साइबेरिया तक तथा दक्षिण में बाहरी पर्वतों जैसे हिमालय, हिंदुकुश और पामीर पठारों से लेकर उत्तर में आर्कटिक तक था।
- यह संसाधन सम्पन्न स्थल था।
- इस स्थल होने की विशेषता थी कि यह समुद्री शक्तियों के लिए बंद था और एक किले जैसा सुरक्षित था।
- प्रवेश हेतु यूराल पर्वत और कैस्पियन सागर के बीच । तकरा गलियारा था। इसके अतिरिक्त स्टेपी घास के मैदान उपलब्ध था।

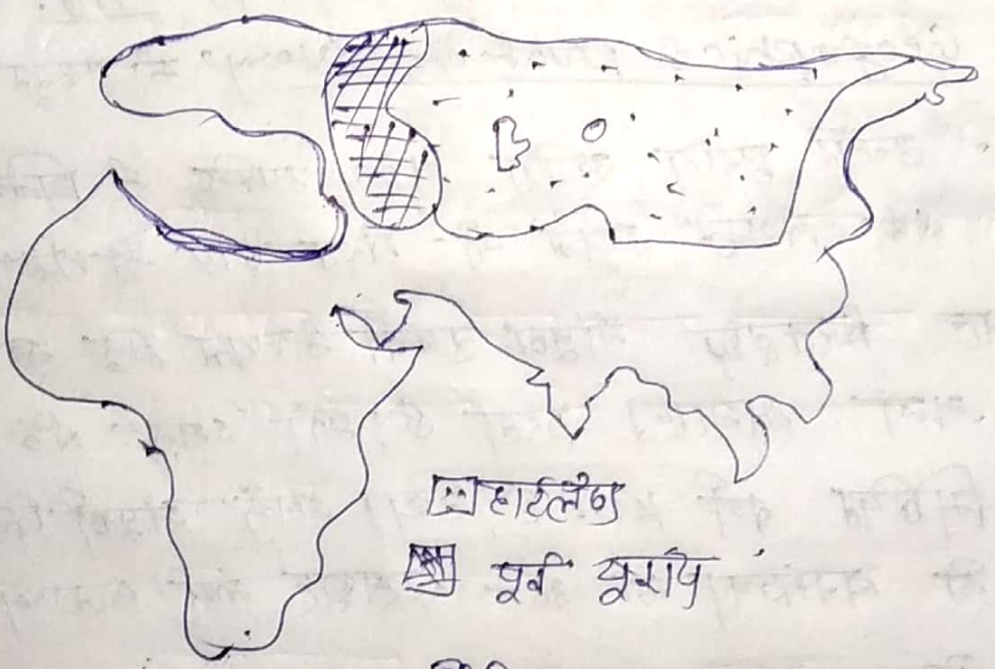

चित्र: मैकिण्डर का हृदयस्थल

मैकिंडर के अनुसार हृदयस्थल रिमलैंड प्रकार के होते हैं।

2 अन्य स्थलखंड

आंतरिक अर्धचंद्र

- इसके अंतर्गत यूराल पर्वत के प० का यूरोपीय भाग
- इरानी उच्च भूमि के द० पश्चिम का एशियाई भूभाग द० पूर्वी एशिया
- भारत व चीन के व्यापक भूभाग इसमें शामिल थे।
- सागर के तटों पर स्थित बेर के कब्जे या आक्रमण से प्रभावित स्थल थे।

बाह्य या द्वीपीय अर्धचंद्र

- इनमें उत्तर एवं द० अमेरिका आस्ट्रेलिया, सहारा के द० का अफ्रीकी भूभाग
- जापान और ग्रेट ब्रिटेन के प्रदेश शामिल थे।

1917 में बोल्शेविक क्रांति हुई तथा प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की हार हुई ट्रांस साइबेरियन रेलमार्ग का निर्माण हुआ इन घटनाओं से मैकिंडर के विचारों को बल मिला।

पुनः 1919 में मैकिंडर ने अपनी पुस्तक 'Democratic Ideas and Reality' में अपने 'पिवट' सिद्धांत को संशोधित करते हुए हृदय स्थल सिद्धांत प्रस्तुत किया।

तथा विश्व द्वीप में यूरोप एशिया के साथ संपूर्ण अफ्रीका को शामिल किया।

मैकिंडर ने मिलाजुलाए स्थलीय भाग के महत्व पर बल दिया उनके अनुसार आने वाला समय स्थलीय शक्तियों का होगा न की समुद्री शक्ति। बलाकि इनके सिद्धांतों की आलोचना स्पाइकमैन ने अपने रिमलैण्ड सिद्धांत में किया।

★ **स्पाइकमैन का रिमलैण्ड सिद्धांत :—**

- अपनी पुस्तक 'The Geography of Peace' में स्पाइकमैन Rimland theory को प्रतिपादित किया।
- यह सिद्धांत मैकिंडर के हृदयस्थल के विपरीत था।
- भौगोलिक विशेषताओं को विदेश नीति का निर्धारक तत्व माना।
- वैदेशिक रणनीति में 'समुद्री शक्ति' मूल कारक था।

स्पाइकमैन ने अपने सिद्धांत में समुद्रीशक्ति पर बल किया इनके अनुसार —

— हृदयस्थल में कृषि योग्य स्थलों का अभाव है। औद्योगिकरण के लिए आवश्यक संसाधन की कमी।

— अतः हृदय स्थल अपनी जनसंख्या का भरण पोषण करने में समर्थ नहीं था यहाँ विश्व शक्ति का केन्द्र नहीं बन सकता।

रीमलैण्ड :-

- यूरेशिया की आंतरिक अर्धचंद्राकार पेटी को स्पाइकमैन ने आर्थिक रूप से सम्पन्न और सामरिक रूप से महत्वपूर्ण पेटी के रूप वर्णित किया और इसे रिमलैण्ड कहा।
- प्राकृतिक संसाधन, मानव संसाधन और गतिशीलता की उपस्थिति के कारण रिमलैण्ड यह है सामुद्रिक एवं स्थलीय मार्ग का मिलन बिंदु है। अतः यहां सभी प्रकार की यातायात सुविधाएं उपलब्ध होने से गतिशीलता अधिक है।

स्पाइकमैन ने भारत की सुरक्षा की स्थिति में अमेरिका पुरानी दुनिया की शक्तियों को अपने विरुद्ध संगठित नहीं होने देना चाहिए

~~आरेख~~

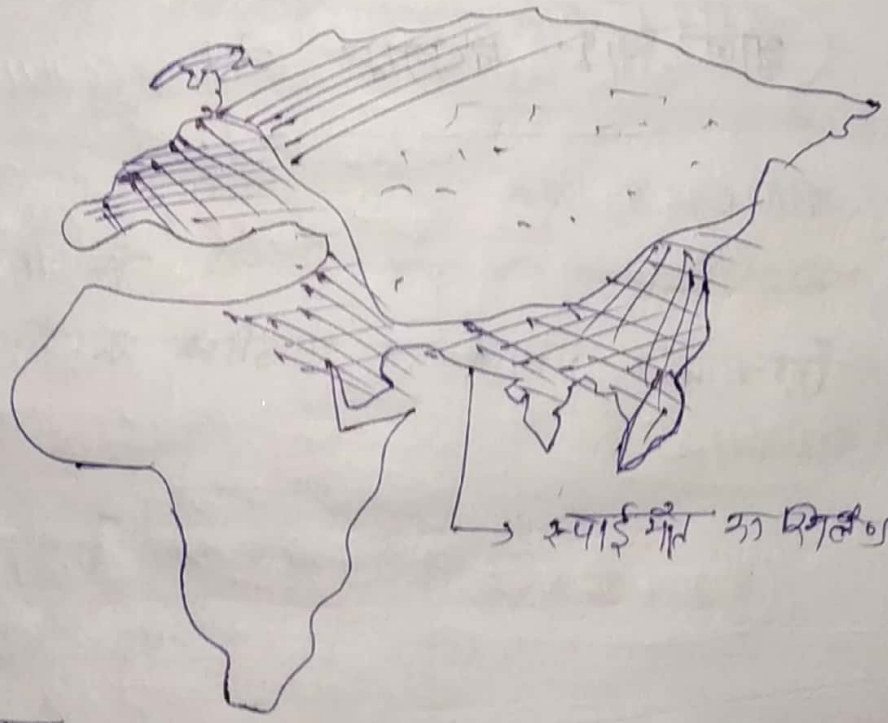

आलोचना – स्पाइकमैन के सिद्धांत की भी आलोचना की जाती है।